International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2018; Page No. 65-67

सतना जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शालेय समायोजन का कला समूह के छात्र–छात्राओं की शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 महेन्द्र मणि तिवारी
पी–एच.डी. (शिक्षा), अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
शालेय समायोजन से तात्पर्य यह है कि यथासंभव शालेय समायोजन परिवेश पर जोर देते हुए प्राकृतिक परिवेश उत्पन्न किया जाना चाहिए जिससे बालक का स्वाभाविक विकास हो सके। शिक्षकों की प्रतिभा का भरपूर उपयोग लेकर विद्यालयों में शिक्षा के अनुकूल परिवेश तैयार करना चाहिए। शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्रों की शालेय समायोजन की औसत उपलब्धि 29.10 तथा मानक विचलन 9.07 है तथा छात्राओं की औसत उपलब्धि 29.40 तथा मानक विचलन 9.09 है। शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल शब्द : उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कला समूह, शालेय समायोजन, अध्ययन।

प्रस्तावना
संस्थागत वातावरण की खोज जो संस्थागत कार्यों के स्तर को ऊँचा करने का कार्य एवं कार्यक्षमता के गुण और संगठन के उत्पादक को उन्नत करती है वातावरण, संस्थागत विकास को पोषण देता है इसलिए व्यवस्था या प्रबन्ध विशेषज्ञों, प्रशासकों एवं सामाजिक वैज्ञानिकों ने वातावरण की खोज पर विशेष बल दिया है।

इस अध्ययन का सामाजिक परिवर्तन विशेषकर सामूहिक जीवन योजना के मूल्यांकन के लिए महत्वपूर्ण मूल तत्व या उपयोग है। यह अध्ययन मानव वातावरण की संप्रत्यात्मक एवं सामान्य रूपरेखा को समझने के योग्य बना सकता है, जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में लागू होता है। विद्यालय के संस्थागत वातावरण की विशेषताओं का निर्धारण, व्यक्ति की व्यवस्था (तंत्र) में प्रदत्त प्रतिसंरक्षण द्वारा परिवर्तनों की योजना बनाने, प्रारूप बनाने उनमें प्रभाव डालने तथा उनका मूल्यांकन करने के उद्देश्य से भाग लेने की अनुमति दे सकता है। वातावरण वृतान्तों क सर्वाधिक प्रयोग, पर्याप्त–अपर्याप्त छात्र अधिगम और प्रभावपूर्ण–अप्रभावपूर्ण विद्यालयों का अधिक सार्थक वर्णन कर सकता है। यह बहुत से व्यवहारों की व्याख्या कर सकता है, जो कि उन विद्यालयों के सन्दर्भ में कारण है जैसा कि निःसंदेह रूप से कहा जा सकता है कि संस्थागत वातावरण की विशेषतायें उनके व्यवहार को प्रभावित करती है, जो इसमें भाग लेते हैं। मानसिक अस्पतालों में किये गये असंख्य अध्ययनों ने यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है। संस्थागत वातावरण जिसमें छात्र शिक्षा ग्रहण करता है। विद्यालय सहयोगी अध्यापक एवं प्रधानाचार्य के प्रति उसके व्यवहार एवं अभिवृत्तियों को प्रभावित करता है। यद्यपि विद्यालय में छात्र भी एक मानव प्राणी है, जो एक आश्रय में जीवन के विभिन्न रूपों में रहता है। प्रत्येक छात्र अपना अधिकांश समय विद्यालय में अध्यापकों, प्रधानाचार्य तथा अन्य प्रशासकों के साथ व्यतीत करता है। वे सब उसके व्यवहार को प्रभावित करते हैं। अधिकांश विद्यालयों में प्रधानाचार्य ही प्रमुख प्रशासक होता है। वह छात्र के जीवन के कई पहलुओं पर नियन्त्रण करने का प्रयास करता है। छात्रों का व्यवहार भी अध्यापकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। अध्यापक का व्यवहार छात्रों में कुछ सीमा तक असन्तोष उत्पन्न करने में सहायक होता है। अनुभूतियाँ जो छात्र के लिए आनन्ददायक नहीं होती हैं, अपमान, भय, घबराहट आदि उत्पन्न करती है। विद्यालय में छात्रों के चारों ओर ये सब उसके विद्यालय वातावरण का निर्माण करते हैं।

बालक घर में व समाज में अपने बड़ो से कुछ न कुछ सीखता रहता है। खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा आदि को वह अपने परिवार से ही सीखता है। सामाजिक सम्बन्धो को, शिष्टाचार को तथा वार्तालाप के नियमों को वह समाज से सीखता है, किन्तु इन सब से सीखते हुये भी विद्यालय की आवश्यकता क्यों पड़ी? एक विचारणीय प्रश्न है। इसमें कोई संदेह नहीं कि सभ्यता के प्रारम्भ में विद्यालय नहीं थे तथा परिवार समुदाय तथा धार्मिक संस्थायें ही विद्यालय का कार्य करती थी। मानवता का अनुभव भी उस समय सीमित था। जीवन सरल था किन्तु ज्यों–ज्यों सभ्यता बढ़ी जीवन कठिन होता गया तथा प्रकृति के नियमों को मनुष्य खोजता गया। अग्नि की खोज मनुष्य की प्रथम सर्वोच्च खोज थी। इसके बाद नये–नये नियम बनाये गये। ज्ञान विस्तृत होता चला गया।

आज मनुष्य जाति ने कला, विज्ञान, इतिहास तथा विभिन्न साहित्यों के रुप में इतने अनुभव एकत्र कर लिये हैं कि किसी अत्यन्त मेधावी मनुष्य के लिये यह सम्भव ही नहीं है कि अपनें जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक कठोर परिश्रम करके भी सभी क्षेत्रों का परिचय तक प्राप्त कर सके। ऐसी स्थिति में मनुष्य के अनुभवों को विभिन्न श्रेणी में विभक्त करके विषय सामग्री को सीमित, निश्चित व अनुस्तरित करके तथा छात्रों की आयु एवं योग्यता की जॉच करके उसके अनुसार पाठ्यक्रम की व्यवस्था करना आवश्यक हो जाता है। संचित अनुभवों को नई पीढ़ी तक पहुँचाना राज्य का दायित्व होता है। इस कार्य के लिये धनराशि की आवश्यकता होती है एक स्थान को शिक्षालय या शिक्षा का स्थान घोषित किया जाना चाहिये। इस कार्य को करने वाले अध्यापकों की सुख सुविधाओं का ध्यान रखने का उत्तरदायित्व समाज का होता है। क्योंकि असंतुष्ट व दुखी अध्यापक समाज को बर्बाद कर सकता है। शिक्षालय का वातावरण सुखद एवं सुविधाजनक होना चाहिये। इन सभी कार्यों को करने का

कार्य शिक्षा द्वारा ही सम्भव है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल सतना जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन की वर्तमान स्थिति तथा उसमें आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया जा सकेगा।

3. शोध की परिकल्पनायें

1. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. उद्देश्य

- शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन का अध्ययन करना।
-

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), चित्रकूट (मझगवाँ), रामपुर बघेलान, नागौद, ऊचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैहर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय सम्मिलित होगें।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु सांख्यिकी विधि का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि

प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

सतना जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 5–5 विद्यालय कुल 40 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संवंधित हो। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के कला समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 5–5 छात्र–छात्राएँ कुल 200 का चयन दैव निदर्षन पद्धति से साक्षात्कार हेतु लिया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के कला समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन का छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – गौड़, प्रकाश (1999)[1], अग्रवाल (1999)[2], कल्पना (2004)[3], शर्मा (2004)[4] एवं तिवारी, महेन्द्र मणि एवं जय सिंह (2017)[5].

9. शोध क्षेत्र का परिचय

भारत के हृदय स्थल में बसा मध्यप्रदेश अपने आप में विभिन्न संस्कृतियों, पुरासम्पदाओं, प्राकृतिक सौंदर्यता, अनमोल धरोहरों, धार्मिक स्थलों, अनुपम कलाकृतियों से सुसज्जित है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृश्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है। जिला वीर, पराक्रमी, योद्धाओं, वीरांगनाओं, सेनानियों आदि से जाना पहचाना जाता है।

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है।

परिकल्पना क्रमांक –01: "शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका 1: शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्र–छात्राओं के शालेय समायोजन			
		छात्र		छात्राएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नहीं)	18	18.00	14	14.00
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति)	28	28.00	34	34.00
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर)	47	47.00	43	43.00
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर)	7	7.00	9	9.00

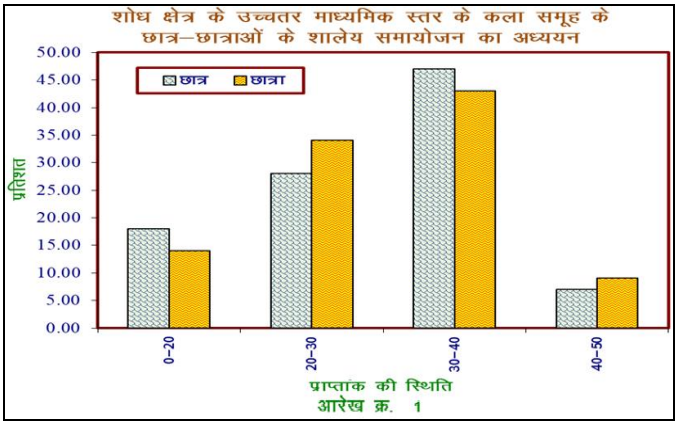

आकृति 1

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 1 से न्यादर्श हेतु चयनित उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह में अध्ययनरत 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन सम्बंधी जानकारी का संकलन किया गया है। उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े दर्शाते है, कि शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्रों में से 6 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 32 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 54 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 8 छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

इसी प्रकार शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्राओं में से 9 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 33 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 52 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 6 छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

तालिका 2: सार्थकता हेतु सारणी

समूह	संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	100	29.10	9.07	–0.23
छात्राएँ	100	29.40	9.09	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (100-1) + (100-1)$
$= 99+ 99$
$= 198$

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्र–छात्राओं की उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्रों की शालेय समायोजन की औसत उपलब्धि 29.10 तथा मानक विचलन 9.07 है तथा छात्राओं की औसत उपलब्धि 29.40 तथा मानक विचलन 9.09 है।

शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन का सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान –0.23 है। 198 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.65 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान –0.23 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह के छात्र–छात्राओं की शालेय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्रों में से 6.00 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 32.00 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 54.00 प्रतिशत छात्र उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 8.38 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला समूह में न्यादर्श हेतु चयनित कुल 100 छात्राओं में से 9.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति नही की, जबकि 33.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की प्राप्ति कर ली है तथा 52.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर अग्रसर है एवं 6.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय समायोजन की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

संदर्भ

1. गौड़, प्रकाश : कम्प्यूटर अनुप्रयोग, रोजगार और नये आयाम, रोजगार और निर्माण, 14 अक्टूबर 1999.
2. अग्रवाल, अनिल : भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005.
3. कल्पना, राजाराम : भारत में विज्ञान प्रौद्योगिकी : स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि. जनकपुरी, नई दिल्ली, 2004.
4. शर्मा, ओ.पी. : ग्रामीण क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल 2004.
5. तिवारी, महेन्द्र मणि एवं जय सिंह : उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला समूह के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व तार्किक योग्यता का अध्ययन, International Journal of Advanced Educational Research. 2017; 2(1):19-23.